5 विष्णु प्रभाकर

लेखक-एक संक्षिप्त परिचय

- **जन्म**—21 जून, 1912 ई0।
- **जन्म-स्थान**—मुजफ्फरपुर (उ0प्र0)।
- प्रभाकर की परीक्षा पास करने पर नाम के आगे 'प्रभाकर' शब्द जुड़ा।
- **प्रथम एकांकी**—'हत्या के बाद'।
- आर्यसमाज और महात्मा गाँधी के जीवन-दर्शन का गहरा प्रभाव।
- **मृत्यु**—11 अप्रैल, 2009 ई0।

जीवन-परिचय—विष्णु प्रभाकर का जन्म 21 जून, 1912 ई0 को उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरपुर जिले में स्थित मीरापुर नामक ग्राम में हुआ था। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा गाँव की पाठशाला में हुई। कुछ पारिवारिक कारणों से उनको शिक्षा के लिए, हिसार (हरियाणा) जाना पड़ा। वहीं पर हाईस्कूल की शिक्षा प्राप्त की। पंजाब विश्वविद्यालय से बी0 ए0 और फिर हिन्दी 'प्रभाकर' की परीक्षा उत्तीर्ण की। इसीलिए उनके नाम के आगे 'प्रभाकर' शब्द लगाया जाने लगा।

शिक्षा समाप्त करने के पश्चात् वे हिसार में ही सरकारी सेवा में आ गये। सरकारी नौकरी के समय भी वे साहित्य के अध्ययन एवं लेखन में संलग्न रहे। सन् 1931 ई0 में उनकी पहली कहानी प्रकाशित हुई। सन् 1933 ई0 में वे हिसार नगर की शौकिया नाटक कम्पनियों के सम्पर्क में आये और उनमें से एक कम्पनी में अभिनेता से लेकर मन्त्री तक का कार्य किया। सन् 1938 ई0 में 'हंस' का एकांकी विशेषांक प्रकाशित हुआ। उसे पढ़ने के उपरान्त और कुछ मित्रों की प्रेरणा से उन्होंने सन् 1939 ई0 में प्रथम एकांकी लिखा, जिसका शीर्षक था—'हत्या के बाद'। आप आकाशवाणी दिल्ली केन्द्र पर ड्रामा प्रोड्यूसर तथा 'बाल भारती' के सम्पादक भी रह चुके हैं। आपके जीवन पर आर्यसमाज और महात्मा गाँधी के जीवन-दर्शन का गहरा प्रभाव रहा है। इनका निधन 11 अप्रैल, 2009 ई0 को हुआ।

कृतियाँ—विष्णु प्रभाकर ने अनेक विधाओं पर अपनी कलम चलायी। आपके द्वारा लिखे गये एकांकी, नाटक, कहानी, उपन्यास, जीवनियाँ, रेडियो-रूपक और रिपोर्ताज हिन्दी साहित्य की महत्त्वपूर्ण निधि हैं। एकांकी के क्षेत्र में आपका विशिष्ट योगदान रहा है। एक ख्यातिप्राप्त एकांकीकार के रूप में 'प्रभाकर' जी ने सामाजिक, राजनीतिक एवं ऐतिहासिक विषय-वस्तु पर आधारित कई प्रभावपूर्ण एकांकियों की रचना की। आपने सामाजिक एकांकियों के आधार पर वर्तमान समाज की यथार्थ स्थिति एवं अनेक ज्वलन्त समस्याओं को उभारा है।

शरत् चन्द्र की जीवनी पर आधारित 'आवारा मसीहा' आपके द्वारा लिखी गयी बहुचर्चित एवं अत्यन्त प्रभावपूर्ण रचना है। प्रभाकर जी की प्रमुख नाट्य रचनाएँ हैं—'नव प्रभात' (नाटक), 'डॉक्टर', 'प्रकाश और परछाइयाँ', 'बारह एकांकी', 'अशोक', 'इन्सान और अन्य एकांकी', 'दस बजे रात', 'ये रेखाएँ', 'ये दायरे', 'ऊँचा पर्वत, गहरा सागर', 'मेरे श्रेष्ठ रंग एकांकी', 'तीसरा आदमी', 'नये एकांकी' तथा 'डरे हुए' (एकांकी-संग्रह)।

अन्य प्रसिद्ध रचनाएँ हैं—'ढलती रात', 'स्वप्नमयी', 'संघर्ष के बाद', 'जाने-अनजाने' आदि।

साहित्यिक अवदान— विष्णु प्रभाकर की रचनाओं में प्रारम्भ से ही स्वदेश-प्रेम, राष्ट्रीय चेतना और समाज-सुधार का स्वर मुखर रहा है। इसके कारण उन्हें ब्रिटिश सरकार का कोपभाजन बनना पड़ा। अतः उन्होंने सरकारी नौकरी से त्यागपत्र दे दिया और स्वतन्त्र लेखन को अपनी जीविका का साधन बना लिया।

विष्णु प्रभाकर ने एकांकी और रेडियो-रूपक के अतिरिक्त कहानी, उपन्यास, रिपोर्ताज आदि विधाओं में भी पर्याप्त मात्रा में लिखा है। इनके एकांकियों में पात्रों का चरित्र-चित्रण मनोवैज्ञानिक आधार पर किया गया है। एकांकियों की कथावस्तु घटनापरक, गतिशील व प्राणवान् है। वाक्य-विन्यास अत्यन्त सरल एवं बोधगम्य है। संवाद छोटे, प्रभावपूर्ण एवं प्रसंगानुकूल हैं। आपने अधिकांश एकांकियों की रचना रेडियो-रूपक के रूप में की है। ♦

सीमा-रेखा

पात्र-परिचय

लक्ष्मीचन्द्र
शरतचन्द्र
सुभाषचन्द्र
कैप्टन विजय
तारा, अन्नपूर्णा, सविता, उमा

(दूसरे भाई, उपमन्त्री शरतचन्द्र का ड्राइंगरूम। आयु 52 वर्ष। आधुनिक पर सादगी की छाप। दीवार पर गाँधी जी का तैल-चित्र है। दो-चार चित्र तिपाइयों पर भी हैं। पुस्तकें काफी हैं। बीचोबीच एक सोफा-सेट है। उधर की ओर सामने दो द्वार हैं, जो बाहर बरामदे में खुलते हैं। उसके पार सड़क है। पूर्व और पश्चिम के द्वार घर के अन्दर जाते हैं। सोफे व मेजों के आस-पास कुर्सियाँ हैं। पर्दा उठने पर मंच खाली है। दो क्षण बाद शरतचन्द्र तेजी से आते हैं। बेहद परेशान हैं, कई क्षण बेचैनी में घूमते हैं। फिर टेलीफोन उठा लेते हैं। नम्बर मिलाते हैं।)

शरत : हलो, मैं शरत बोल रहा हूँ। विजय का कुछ पता लगा?······क्या······क्या अभी तक नहीं लौटा? झगड़ा बढ़ गया है। क्या? गोली······गोली चलानी पड़ी। भीड़ बैंक के पास बेकाबू हो गयी थी। बैंक को लूटा? नहीं······कहीं और लूटमार हुई? नहीं······कोई घायल? अभी कुछ पता नहीं। ओह, देखो, अभी पता करके बताओ। विजय आये तो मुझे टेलीफोन करने को कहो······तुरन्त······समझे, मैं घर पर ही हूँ। (दूसरा नम्बर मिलाना चाहते हैं कि उनकी पत्नी अन्नपूर्णा घबरायी हुई बाहर से आती है।)

अन्नपूर्णा : आपने कुछ सुना है?

शरत : हाँ, सुना है गोली चल गयी।

अन्नपूर्णा : अपने राज में भी गोली चलती है?

शरत : अपना राज समझता कौन है? जब तक अपना राज नहीं समझेंगे, तब तक गोली चलेगी ही। लेकिन, तुम कहाँ गयी थी?

अन्नपूर्णा : जीजी के पास! रास्ते में सुना रामगंज में गोली चल गयी। बाजार बन्द हो रहे हैं, भय छाया हुआ है, लोग सरकार को गालियाँ दे रहे हैं।

शरत : (चोंगा रखकर आगे आ जाते हैं।) सरकार को गाली ही दी जाती है। गोली चली तो गाली देते हैं, बैंक लुट जाता तब भी गाली ही देते।

अन्नपूर्णा : बैंक! कौन-सा बैंक लुट रहा था, बैंक से तो कुछ झगड़ा नहीं था, कल आपके पीछे कुछ विद्यार्थी बसवालों से झगड़ पड़े थे और आप जानते हैं कि विद्यार्थी······

शरत : (एकदम) कि विद्यार्थी कानून की चिन्ता नहीं करते। बच्चे हैं, अल्हड़ हैं······(तेज होकर) यह भी कोई बात है? लोग पागल हो जाते हैं। कानून अपने हाथ में ले लेते हैं। गोली चली है तो जरूर कोई कारण रहा होगा। कुछ लोगों ने बैंक पर धावा बोला होगा। पुलिस पर पत्थर फेंके होंगे। (सविता का प्रवेश–चौथा भाई, जन-नेता सुभाषचन्द्र की पत्नी, आयु पैंतीस वर्ष)

सविता	:	फेंके होंगे तो इसका यह अर्थ नहीं कि पत्थर के जवाब में गोली चला दी जाय। गोली उन्हें आत्मरक्षा के लिए नहीं दी जाती, जनता की रक्षा के लिए दी जाती है।
अन्नपूर्णा	:	सविता, तुम कहाँ से आ रही हो? (लक्ष्मीचन्द्र का प्रवेश, व्यापारी, सबसे बड़े भाई, आयु 56 वर्ष)
शरत	:	तुम क्या कह रही हो?
सविता	:	मैं ठीक कह रही हूँ······
लक्ष्मी	:	तुम बिल्कुल गलत कह रही हो। पुलिस गोली न चलाती तो बैंक लुट जाता, बाजार लुट जाता, चारों ओर लूटमार मच जाती। शासन की जड़ें हिल जातीं।
सविता	:	शासन की जड़ें हिलतीं या न हिलतीं, दादा जी, पर आपकी जड़ें जरूर हिल जातीं। आपका व्यापार ठप्प हो जाता। आपका नुकसान होता······
लक्ष्मी	:	हाँ, मेरा नुकसान होता। मैं सरकार की प्रजा हूँ। प्रजा की रक्षा करना सरकार का फर्ज है······
सविता	:	यानी सरकार की पुलिस आपकी रक्षा के लिए है।
लक्ष्मी	:	हाँ, मेरी रक्षा करने के लिए है।
सविता	:	केवल आपकी······?
अन्नपूर्णा	:	न, न, सविता। इनका मतलब केवल अपने से नहीं है। भीड़ इनका ही नुकसान करके न रह जाती। वह सारे शहर को बर्बाद कर देती।
सविता	:	भीड़ में इतनी शक्ति है जीजी!
शरत	:	भीड़ में कितनी शक्ति है, सवाल यह नहीं है।
सविता	:	तो क्या है?
शरत	:	सवाल यह है कि क्या भीड़ को कानून अपने हाथ में लेने का अधिकार है? मैं समझता हूँ, उसे यह अधिकार नहीं है।
सविता	:	और यदि वह लेते हैं तो······
शरत	:	तो वह विद्रोह है और विद्रोह को दबाने का सरकार को पूरा-पूरा अधिकार है।
सविता	:	लेकिन विद्रोह क्यों किया गया है, यह देखना क्या सरकार का कर्त्तव्य नहीं है? (टेलीफोन की घण्टी बजती है। शरत एकदम चोंगा उठाते हैं। सब उनके पास आते हैं।)
शरत	:	हलो······हाँ, मैं ही हूँ······क्या स्थिति अभी काबू में नहीं है? लूटमार तो नहीं हुई है न? अच्छा······घायल कितने हुए? ······पाँच वहीं मर गये। बीस घायल अस्पताल में हैं······मैं अभी आता हूँ। अभी······ (टेलीफोन का चोंगा रखकर तेजी से जाने को मुड़ते हैं।)
अन्नपूर्णा	:	(एकदम) नहीं, नहीं आप ऐसे नहीं जा सकते।
लक्ष्मी	:	हाँ, पहले फोन करके पुलिस बुला लो।
सविता	:	पुलिस क्या करेगी? चलिये, मैं चलती हूँ।
शरत	:	आप चिन्ता न करें। पुलिस की गाड़ी बाहर खड़ी है।
सविता	:	(व्यंग्य से) जरूर होगी। जनता के नेता अब पुलिस की गाड़ी में ही जा सकते हैं। (आवेश में) जिन्होंने जनता का नेतृत्व किया, जनता के आगे होकर गोलियाँ खायीं, जो एक दिन जनता की आँखों के तारे थे वे ही आज पुलिस के पहरे में जनता से मिलने जाते हैं।

(शरत तिलमिलाकर कुछ कहना चाहते हैं कि तभी तीसरे भाई विजय, पुलिस कप्तान, आयु 48 वर्ष, पूरी वर्दी में प्रवेश करते हैं।)

लक्ष्मी : (एकदम) विजय!

सविता : कप्तान साहब, आप यहाँ!

अन्नपूर्णा : विजय, अब क्या हाल है?

शरत : विजय, तुमने यह क्या कर डाला? तुमने गोली क्यों चलायी? तुम्हें सोचना चाहिए था कि······

लक्ष्मी : विजय ने जो कुछ किया सोच-समझकर किया है और ठीक किया है।

अन्नपूर्णा : हाँ, बिना सोचे-समझे कोई काम कैसे किया जा सकता है, सोचा तो होगा ही पर······

शरत : नहीं, नहीं, यह बहुत बुरा हुआ। जानते नहीं, अब जनता का राज है और जनता के राज में, जनतन्त्र में जनता की प्रतिष्ठा होती है।

विजय : लेकिन गुण्डों की नहीं।

सविता : वे गुण्डे हैं!

लक्ष्मी : हाँ, वे गुण्डे हैं। दंगा करनेवाले गुण्डे होते हैं, शोहदे होते हैं।

शरत : नहीं, भैया! वे सब गुण्डे नहीं होते। हाँ, गुण्डों के बहकावे में जरूर आ जाते हैं।

सविता : यह भी खूब रही। जनता कुछ गुण्डों के बहकावे में आ जाय और आप लोगों की, जो कल तक उनके सब-कुछ थे, कोई बात न सुनें।

शरत : (तिलमिलाकर) सविता······सविता······

सविता : सुनिए, भाई साहब! बात यह है कि आप अपना सन्तुलन खो बैठे हैं। आप निरंकुश होते जा रहे हैं। आप अपने को केवल शासक मानने लगे हैं। आप भूल गये हैं कि जनता राज में शासक कोई नहीं होता। सब सेवक होते हैं।

विजय : (थका-सा) सेवक होते हैं तो क्या सेवक मर जाने के लिए हैं?

सविता : हाँ, मर जाने के लिए ही हैं। कोई मरकर देखे तो······

लक्ष्मी : सविता, बहू! तुम बहुत ही आगे बढ़ रही हो। स्वतन्त्रता का युग है तो इसका यह मतलब नहीं कि बड़े-छोटे का विचार न किया जाय।

अन्नपूर्णा : हाँ, सविता! तुम्हें इतना तेज नहीं होना चाहिए।

सविता : मैं क्षमा चाहती हूँ। आप सब मुझसे बड़े हैं। आपका अपमान मैं कभी नहीं कर सकती, ऐसा सोच भी नहीं सकती। पर इस नाते-रिश्ते से ऊपर भी तो हम कुछ हैं। हम स्वतन्त्र भारत की प्रजा हैं, हम एक स्वतन्त्र देश के नागरिक हैं। हम इन्सान हैं।

विजय : इन्सान हैं तो सभी हैं। स्वतन्त्र देश के नागरिक हैं तो सभी हैं। कानून सब पर लागू होता है।

लक्ष्मी : बेशक सब पर लागू होता है। सब इन्सान हैं।

सविता : बेशक सब समान हैं। दादा जी, पर जिन पर व्यवस्था और न्याय की जिम्मेदारी है, उनका दायित्व अधिक है।

शरत : जरूर है, इसीलिए मुझे जाना है। लेकिन जाने से पहले मैं जानना चाहूँगा विजय कि आखिर बात कैसे बढ़ गयी?

विजय : मैं तो वहाँ था नहीं। कल के झगड़े के बारे में आप जानते ही हैं। आज फिर विद्यार्थियों ने प्रदर्शन किया। डिपो पर हमला किया। वहाँ से वे बैंक के पास आये······

शरत : क्या उन्होंने बैंक पर हमला किया?

विजय : कर सकते थे। शायद वे यही चाहते थे।

शरत : कौन विद्यार्थी……

विजय : यह तो नहीं कह सकता। भीड़ में केवल विद्यार्थी ही नहीं थे। शरारती लोग ऐसे अवसरों की ताक में रहते हैं। पुलिस ने भीड़ को रोका तो इन्होंने पत्थर फेंके……

अन्नपूर्णा : पुलिस पर पत्थर फेंके?

लक्ष्मी : तब तो जरूर उनका इरादा बैंक लूटने का था।

शरत : क्या पुलिसवालों को चोटें आयीं?

विजय : जी हाँ, दस-बारह सिपाही घायल हो गये। एक इन्स्पेक्टर का सिर फूट गया।

सविता : बस?

लक्ष्मी : तुम चाहती थी कि वे सब मर जाते।

(चौथे भाई सुभाषचन्द्र का प्रवेश–जन-नेता, आयु 44 वर्ष)

सुभाष : हाँ, वे सब मर जाते तो ठीक होता।

शरत : सुभाष?

अन्नपूर्णा : सुभाष, यह तुम क्या कह रहे हो?

लक्ष्मी : तुम तो कम्युनिस्ट हो गये हो और अपनी बहू को भी तुमने ऐसा ही बना दिया (बाहर शोर उठता है)।

सुभाष : दादा जी! मैं न कभी कम्युनिस्ट था, न हूँ और न कभी बनूँगा, पर मैं स्वतन्त्र भारत में गोली चलाना जुर्म मानता हूँ।

लक्ष्मी : चाहे जनता कुछ भी करे। उसे सब अधिकार है।

सुभाष : बेशक है। उसी ने इन लोगों के (शरत की ओर इशारा करता है) हाथ में शासन की बागडोर सौंपी है।

शरत : किसलिए सौंपी है? रक्षा के लिए या बर्बादी के लिए?

(बाहर शोर तेज होता है। सविता चौंकती है। धीरे-से बोलती है और बाहर जाती है। शेष लोग तेज-तेज बोलते रहते हैं।)

सविता : (अलग से) यह शोर कैसा है देखूँ तो……(खिसक जाती है।)

सुभाष : (शरत की बात का उत्तर देते हुए) रक्षा के लिए।

शरत : लेकिन जब जनता स्वयं नाश करने पर तुल जाय तो क्या हमें उसे ऐसा करने देना चाहिए।

सुभाष : नहीं।

विजय : (एकदम) यही तो हमने किया है।

लक्ष्मी : और ठीक किया है।

शरत : और ऐसा करने का उन्हें अधिकार है। वे हैं ही इसीलिए। तुम भी इसे मानते हो तो फिर कहना क्या चाहते हो?

सुभाष : यही कि हमें राज्य की रक्षा करते-करते प्राण दे देने चाहिए, प्राण लेने नहीं चाहिए। हमें देने का ही अधिकार है, लेने का नहीं?

शरत : सुभाष! यह कोरा आदर्शवाद है।

सुभाष : कर्त्तव्य का पालन करते हुए मरना यदि आदर्शवाद है तो मैं कहूँगा कि विश्व के प्रत्येक नागरिक को ऐसा ही आदर्शवादी होना चाहिए।

शरत : सुभाष, तुम केवल बोलना जानते हो।

सुभाष : आपसे ही सीखा है, भाई साहब।

विजय : लेकिन जिम्मेदारी सँभालना नहीं सीखा।

सुभाष : वह भी सीखा है। मैं जनता से प्रतिज्ञा करके आया हूँ, आज शाम तक गोली चलानेवाले कप्तान-पुलिस को मुअत्तिल कराके छोड़ूँगा।

अन्नपूर्णा : क्या······क्या कहा तुमने?

लक्ष्मी : अपने ही घर में तुम अपनों के दुश्मन बनकर आये हो।

सुभाष : अपना-पराया मैं कुछ नहीं जानता। मैं जनता का प्रतिनिधि हूँ। मैं माननीय उपमन्त्री श्री शरतचन्द्र को बताने आया हूँ कि उनके एक अधिकारी ने निहत्थी जनता पर गोली चलाकर जो बर्बर काम किया है, उसकी जाँच करवानी होगी, और जब तक वह जाँच पूरी नहीं होती, तब तक गोली चलाने से सम्बन्धित सब व्यक्तियों को मुअत्तिल करना होगा।

शरत : यह किसकी माँग है?

सुभाष : उस जनता की, जिसने आपको गद्दी सौंपी है, जिससे आज आप दूर भागते हैं, डरते हैं।

शरत : मैं डरता हूँ?

सुभाष : हाँ, आप डरते हैं, यदि न डरते तो घर में छिपकर बैठे रहने के बजाय जनता के पास जाते। तब यह नौबत न आती, गोली न चलती, निर्दोष-निहत्थे नागरिक न मरते।

शरत : लेकिन तुम भी तो जनता के नेता हो, तुमने कौन-सा तीर मार लिया?

सुभाष : मैंने क्या किया है, यह मेरे मुँह से सुनकर क्या करेंगे, पर इतना कह देता हूँ कि जनता संयत न रहती तो कप्तान विजयचन्द्र यहाँ बैठे दिखायी न देते। इनसे पूछिए तो क्या इन्हें बन्दूकें इसलिए दी गयी हैं कि जरा-सा पत्थर आ लगे तो जनता को गोली से भून दें······

लक्ष्मी : गोली न चलती तो······

सुभाष : (एकदम) दादा जी, आप न बोलें। आप व्यापारी हैं। आपका सिद्धान्त आपका स्वार्थ है······

लक्ष्मी : (एकदम आवेश में) मैं तो स्वार्थी हूँ, पर तुम अपनी कहो। तुम्हारी नेतागीरी भी तो मुझ स्वार्थी के पैसे से ही चलती है।

सुभाष : ठीक है, उतना पैसा सार्थक होता है······पर आप यह क्यों भूल गये कि उस दिन जब कुछ व्यापारी पकड़े गये थे, तो आपने विजय भैया को कितना कोसा था।

लक्ष्मी : और आज तुम कोस रहे हो। क्योंकि तुम मन्त्री नहीं हो, विरोधी दल के हो।

सुभाष : हाँ, मैं विरोधी दल का हूँ, लेकिन दादा जी! मैं आपसे बातें नहीं कर रहा।

लक्ष्मी : (क्रोध में) तो मैं ही कब तुमसे बातें कर रहा हूँ, वाह! (तेजी से अन्दर जाते हैं।)

अन्नपूर्णा : दादा जी, दादा जी······(पीछे-पीछे जाती है, विजय भी जाते हैं।)

सुभाष : मैं माननीय उपमन्त्री महोदय से पूछता हूँ कि······

शरत : (एकदम) और मैं तुमसे पूछता हूँ कि क्या जनता के राज में भी सड़कों पर प्रदर्शन होने चाहिए, भीड़ को कानून हाथ में लेना चाहिए?

सुभाष : जब तक सरकार और उसके अधिकारी ठीक आचरण नहीं करेंगे तब तक जनता प्रदर्शन करती ही रहेगी, कानून हाथ में लेती रहेगी। भाई साहब, इस नौकरशाही ने शासन की इस भूख ने आपको जनता से दूर कर दिया है।

शरत : सुभाष, तुम बार-बार एक ही बात की रट लगाये जा रहे हो।

सुभाष : मैं ठीक कह रहा हूँ। जनता सरकार के ढाँचे को उतना महत्त्व नहीं देती, जितना अधिकारियों की ईमानदारी और हमदर्दी को। आप चलिये मेरे साथ······(सहसा शोर बढ़ता है।)

शरत	:	(एकदम) हाँ, चलूँगा, मुझे तो कभी का चले जाना था, पर······यह शोर कैसा?
सुभाष	:	अवश्य कोई बात है। देखूँ······(सुभाष जाने को मुड़ता है, तभी लक्ष्मीचन्द्र की पत्नी तारादेवी विक्षिप्त-सी वहाँ आती है।)
तारा	:	(पागल-सी) विजय कहाँ है? (चारों तरफ देखती है।)
सुभाष	:	भाभी जी, क्या बात है?
तारा	:	मैं पूछती हूँ, विजय कहाँ है। उसका मनचाहा हो गया। उसकी गोली अरविन्द के सीने से पार हो गयी······
शरत	:	(एकदम) भाभी!
सुभाष	:	भाभी, तुम क्या कह रही हो? (सविता का प्रवेश)
सविता	:	भाभी ठीक कह रही हैं। अरविन्द जनता की सरकार की गोली का शिकार हो गया।
		(लक्ष्मीचन्द्र, विजय, अन्नपूर्णा का प्रवेश)
लक्ष्मी	:	कौन गोली का शिकार हो गया?
सविता	:	अरविन्द!
लक्ष्मी	:	(काँपकर) क्या······क्या अरविन्द मर गया?
तारा	:	हाँ, गोली उसके सीने से पार हो गयी। वह मर गया। (सब हक्के-बक्के रह जाते हैं। पागल-से देखते हैं। लक्ष्मीचन्द्र सोफे पर गिर पड़ते हैं। विजय दोनों हाथों में मुँह ढक लेते हैं। अन्नपूर्णा पागल-सी तारा को सँभालती है।)
अन्नपूर्णा	:	अरे, मेरे अरविन्द को किसने मार डाला, नाश हो जाय इस पुलिस का! बिना गोली कोई बात नहीं करता। अरे विजय, यह तुमने क्या किया?
विजय	:	(पागल-सा) ओह! यह क्या हुआ? अरविन्द वहाँ क्यों गया था? (टेलीफोन की घण्टी बजती है, सविता उठती है।)
सविता	:	हलो, जी हाँ हैं। (विजय से) कप्तान साहब, आपका फोन है। (चोंगा पटककर तेजी से किसी की ओर देखे बिना भागती है।)
विजय	:	(फोन लेकर) जी हाँ, क्या······भीड़ बेकाबू हो गयी है, टेलीगंज में······हाँ, अभी आया।
सुभाष	:	मैं भी जाता हूँ कहीं कुछ हो न जाय। (जाता है)
शरत	:	मैं भी चलता हूँ। (मुड़ता है, पर जब तारा बोलती है तो ठिठक जाता है।)
अन्नपूर्णा	:	तारा भाभी भी अन्दर चलें। (उठाती है।)
तारा	:	(पूर्ववत्) सब जाओ, पर अरविन्द क्या आयेगा? उसने किसी का क्या बिगाड़ा था। वह चिल्लाया—मैं दंगा नहीं करता, मैं बाजार जाता हूँ······(विक्षुब्ध हो जाती है।)
लक्ष्मी	:	पर मदान्ध पुलिसवालों ने एक न सुनी। पुलिस को अपनी जान इतनी प्यारी है कि एक दस वर्ष के बच्चे से भी उन्हें डर लगा······
सविता	:	(जाते-जाते) किसी ने उसकी आवाज नहीं सुनी। किसी ने उसकी ओर नहीं देखा।
लक्ष्मी	:	सब अन्धे हैं। ताकत के अन्धे! जो सामने आता है उसे कुचल देना चाहते हैं! चाहे वह धूल हो, चाहे पत्थर······
शरत	:	(जाता हुआ व्यथा से) ओह, यह क्या हो रहा है? यह क्या हुआ?
लक्ष्मी	:	वही हुआ जो विजय चाहता था, जो तुम चाहते थे।
शरत	:	(एकदम) दादा जी······

लक्ष्मी : (पूर्ववत्) तुमने मेरा घर बरबाद कर दिया। मेरे बच्चे को मार डाला। तुम सब हत्यारे हो······।

शरत : दादा जी, ओह मैं क्या कहूँ······

लक्ष्मी : (पूर्ववत्) जब पैसे की जरूरत होती है तो मेरे पास भागे आते हो। टैक्स माँगते हो, दान माँगते हो, व्यापार में पैसा लगाने को कहते हो और······मुझी पर गोली चलाते हो······

शरत : दादा जी, गोली उन्होंने जान-बूझकर नहीं चलायी। अरविन्द तो बच्चा था। उससे किसी का क्या वैर था?

लक्ष्मी : वैर क्यों नहीं था। वह जनता में था तुम हो जनता के शत्रु! मैं अभी जाकर विजय से पूछता हूँ······(जाने को उठते हैं।)

(सविता आती है)

सविता : अभी रुकिये, दादा जी! भाभी जी को दौरा पड़ गया है······(टेलीफोन की घण्टी बजती है, उठाती हैं) हलो, जी हाँ (शरत से) आपका फोन है।

शरत : (फोन लेकर) हलो, जी हाँ। क्या······मन्त्रिमण्डल की बैठक हो रही है, मुझे भी बुलाया है। मैं अभी आया। (शरत फोन रखकर जाने को मुड़ते हैं। तभी सुभाष का तेजी से प्रवेश)

सुभाष : भाई साहब! आपको अभी चलना है।

शरत : मैं चल ही रहा हूँ। मन्त्रिमण्डल की बैठक हो रही है।

सुभाष : वहाँ नहीं आपको मेरे साथ चलना है। आपको जनता के पास चलना है। जनता में बड़ी उत्तेजना है। विद्यार्थी पीछे रह गये, दूसरे समाजद्रोही तत्त्व आगे आ गये हैं और विजय ने गोली चलाने से इन्कार कर दिया है।

शरत : (पागल-सा) विजय ने गोली चलाने से इन्कार कर दिया?

सुभाष : जी हाँ।

शरत : वह कहाँ है?

सुभाष : भीड़ के सामने!

शरत : वह भीड़ के सामने है। (एकदम दृढ़ होकर) चलो, सुभाष, मैं देखता हूँ जनता क्या चाहती है। (दोनों जाते हैं)

सविता : मैं भी चलती हूँ।

लक्ष्मी : मैं भी चलता हूँ।

सविता : नहीं-नहीं, आप ठहरें। आप भाभी जी को सँभालें। (जाती हैं।)

(तभी अन्नपूर्णा आती है।)

अन्नपूर्णा : क्या हुआ दादा जी, सब कहाँ गये?

लक्ष्मी : सब गये। सुभाष आया था। कहता था, विजय ने गोली चलाने से इन्कार कर दिया। अब······अब तो इन्कार करना ही था। वे तो मेरे बच्चे को मारना चाहते थे······

अन्नपूर्णा : नहीं-नहीं, दादा जी यह बात नहीं थी।

लक्ष्मी : यह बात कैसे नहीं थी? मैं उन सबको जानता हूँ। वे मेरे पैसे से आगे बढ़े और मुझी को बरबाद कर दिया। मैं पूछता हूँ, उन्होंने पहले ही गोली चलाने से इन्कार क्यों न किया। क्योंकि······क्योंकि······

अन्नपूर्णा : नहीं दादा जी! नहीं······

लक्ष्मी : (आवेश में) ये मेरे छोटे भाई······एक ने मुझे स्वार्थी और देशद्रोही कहा, दूसरे ने मेरे बेटे को मार डाला। मेरे मासूम बच्चे को मार डाला, मार डाला······(रोकर गिर पड़ते हैं।)

अन्नपूर्णा : (सँभालती हुई) दादा जी, दादा जी! ओह, यह एक ही घर में क्या होने लगा। भाई-भाई में मनमुटाव! (एकदम) नहीं, नहीं, यह नहीं होगा। दादा जी, आप गलत समझ रहे हैं······

लक्ष्मी	:	(आँखें खोलकर) मैं गलत समझ रहा हूँ······मैं गलत समझ रहा हूँ। अरविन्द मेरे बच्चे! तू चला गया, मैं तुझसे दो बातें भी न कर सका, तू तो भीड़ में भी नहीं था! अरविन्द······
		(तारा का प्रवेश)
तारा	:	अरविन्द! क्या अरविन्द आया है? कहाँ है?
		(अन्नपूर्णा तारा को पकड़ती है।)
अन्नपूर्णा	:	भाभी जी, भाभी जी, आप क्यों उठ आयीं? हम अभी अस्पताल चलते हैं! आप अपने को सँभालिये। (अन्नपूर्णा तारा को अन्दर ले जाती है। लक्ष्मीचन्द्र भी जाते हैं तभी अस्त-व्यस्त परेशान सविता का प्रवेश।)
सविता	:	(बोलती जाती है) अद्भुत दृश्य था, अपार भीड़ थी, उनके आगे खड़े थे कप्तान भैया, दूर से देख सकी। किसी ने पास जाने ही नहीं दिया। एक रेला आया और मैं पीछे आ पड़ी।
		(अन्नपूर्णा आती है।)
अन्नपूर्णा	:	तुम आ गयी। वे लोग कहाँ हैं? सुभाष कहाँ है?
सविता	:	कुछ पता नहीं, मुझे किसी का कुछ पता नहीं। मैं आगे नहीं बढ़ सकी और वे दोनों आगे बढ़ते चले गये। एक बार भीड़ के बीच में सबको देखा, फिर उस ज्वार-भाटा में सब-कुछ छिप गया। (टेलीफोन की घण्टी बजती है, उठाती है।) हलो, जी वे तो गये। जी हाँ, भीड़ में जाते मैंने देखा था। जी हाँ। (फोन रखती है।) मन्त्रिमण्डल की बैठक में शरत भाई साहब का इन्तजार हो रहा है। वे अभी तक पहुँचे ही नहीं? मैं कहती हूँ ये लोग मन्त्रिमण्डल की बैठक क्यों कर रहे हैं। जो लोग विदेशियों की गोलियों से नहीं डरे, वे अपने ही बच्चे और भाइयों से क्यों डरते हैं? जनता में क्यों नहीं आते?
अन्नपूर्णा	:	क्योंकि शासन भीड़ में आकर नहीं चलाया जाता। आखिर जनतन्त्र भी तो कानून का राज है।
सविता	:	है, पर······(एकदम) नहीं, अब बहस करने का समय नहीं है। सोचने और काम करने का समय है। बेचारा अरविन्द! उसकी मौत क्यों हुई? जन-राज्य में एक निर्दोष, निरीह बालक की हत्या क्यों हुई? (टेलीफोन की घण्टी फिर बजती है। उठाकर) हलो, क्यों······हाँ, हाँ कप्तान साहब तो कभी के चले गये। क्या, उनका पता नहीं मिल रहा। नहीं वे······वे भीड़ के सामने थे। मैंने देखा था। जी हाँ, मैंने देखा था। उधर का क्या हाल है? ठीक नहीं। उनके हुक्म के बिना कुछ नहीं कर सकते······हाँ, हाँ, आये तो कह दूँगी······क्या······कोई आया है। हाँ, हाँ पूछिए······ हलो······हलो······हलो······(फोन रखकर) कनेक्शन काट दिया······अवश्य कोई बात है! (जाने को मुड़ती है।) मैं जाती हूँ······
अन्नपूर्णा	:	सविता! तुम न जाओ! ठहरो तो, सविता······(सविता नहीं रुकती) गयी।
लक्ष्मी	:	(आकर) कौन गयी? क्या बात है?
अन्नपूर्णा	:	जरूर कोई बात है। सविता टेलीफोन कर रही थी, पता नहीं किसी ने क्या कहा, भागी चली गयी।
लक्ष्मी	:	तो मैं भी जाता हूँ। अरविन्द को भी लाना है। (गला रुँध जाता है, तेजी से जाते हैं।)
अन्नपूर्णा	:	दादा जी! अभी रुकिये। किसी को आ जाने दीजिए।
लक्ष्मी	:	घबराओ नहीं, मैं बच्चा नहीं हूँ (जाते हैं।) (दूसरे द्वार से विजय की पत्नी उमा, आयु 42 वर्ष, पागलों की तरह आती है।)
उमा	:	जीजी, सब कहाँ हैं?
अन्नपूर्णा	:	मुझे पता नहीं। यहाँ से तो कभी के गये। क्या तुझे सविता नहीं मिली।
उमा	:	मुझे कोई नहीं मिला। अरविन्द की खबर सुनकर भागी आ रही हूँ, जीजी······जीजी, मैं भाभी जी को कैसे मुँह दिखाऊँगी? मैं मर क्यों न गयी?
अन्नपूर्णा	:	(शून्यवत्) न जाने क्या होनेवाला है। एक ही घर के लोग एक-दूसरे को खा रहे हैं। (बाहर भीड़ का शोर) यह क्या? लोग इधर आ रहे हैं।

उमा : (द्वार पर जाकर देखती है, चीख पड़ती है। जीजी······ई······।

अन्नपूर्णा : क्या हुआ, उमा? (उठकर तेजी से आगे बढ़ती है।)

(तभी घायल शरत वहाँ आते हैं। मुख पर घाव है। एक हाथ बँधा है।)

अन्नपूर्णा : (काँपकर) आप! यह क्या हुआ?

शरत : वही जो होना चाहिए था। विजय भीड़ में कुचला गया, पर उसने गोली नहीं चलायी।

उमा : कुचले गये, कौन?

शरत : विजय कुचला गया। चला गया।

उमा : (चीखकर) भाई साहब, वे कहाँ हैं? (भागती है।)

अन्नपूर्णा : (शरत से) यह तुम क्या कह रहे हो?

शरत : भीड़ सन्तुलन खो बैठी थी। विवेक खो बैठी थी। वह चिल्लाती रही—'अरविन्द कहाँ है? अरविन्द को लौटाओ।' और विजय भीड़ के सामने अड़ा रहा। चिल्लाता रहा—'मुझसे अरविन्द का बदला लो। मैंने अरविन्द को मारा है। तुम मुझे मार डालो!'

उमा : और भीड़ ने उन्हें मार डाला।

शरत : पता नहीं किसने मार डाला—उनके गिरते ही भीड़ पर जैसे अंकुश लग गया, पर······पर······पर जब वहाँ शान्ति हुई तो विजय और सुभाष दोनों कुचले हुए पड़े थे।

उमा : सुभाष भी······

अन्नपूर्णा : सुभाष भी कुचला गया। हाय······

शरत : हाँ, सुभाष भी कुचला गया। लेकिन खबरदार, जो उनके लिए रोये। रोने से उन्हें दुःख होगा। उन्होंने प्राण दे दिये, पर शासन और जनता का सन्तुलन ठीक कर दिया। वे शहीद हो गये, पर दूसरों को बचा गये। नगर में अब बिल्कुल शान्ति है। सब मौन सगर्व बलिदानों की चर्चा कर रहे हैं। सब शोक-सन्तप्त हैं। (बाहर देखकर) लो, वे आ गये। रोना मत-रोना मत (आगे बढ़कर) हाँ वहीं लिटा दो। (तभी लक्ष्मीचन्द्र और सविता के साथ पुलिस तथा दूसरे अधिकारियों का प्रवेश)। धीरे-धीरे वे विजय, सुभाष और अरविन्द की लाशें बराबर के कमरे में लाकर रखते हैं। एक भयंकर सन्नाटा छाया रहता है। सविता का मुख पत्थर की तरह कठोर है। लक्ष्मीचन्द्र तूफान की तरह काँप रहे हैं। शरत दृढ़ता से प्रबन्ध में लगे हैं। उमा तेजी से बढ़ती है। बराबर के कमरे में झाँककर जोर की चीख मारती है।)

उमा : माँ जी-ई यह क्या हुआ?

(तारा अन्दर से आती है।)

तारा : कैसा शोर है, अन्नपूर्णा? अरविन्द आ गया? कहाँ है!

शरत : भाभी, यह देखो, कमरे में तीनों लेटे हैं। कभी नहीं उठेंगे। ये अरविन्द और सुभाष हैं—यह जनता की क्षति है और इधर यह विजय है—यह सरकार की क्षति है।

अन्नपूर्णा : (रोकर) यह तुम कैसी बावलों की-सी बातें करते हो। यह सब मेरे घर की क्षति है।

सविता : (उसी तरह पत्थरवत्) नहीं, जीजी! यह उनकी नहीं, सारे देश की क्षति है, देश क्या हमसे और हम क्या देश से अलग हैं।

शरत : तुमने ठीक कहा, सविता। यह हमारे देश की क्षति है। जनतन्त्र में सरकार और जनता के बीच कोई विभाजक रेखा नहीं होती।

(पर्दा गिरता है)

अभ्यास प्रश्न

● समीक्षात्मक प्रश्न

1. 'सीमा-रेखा' एकांकी का कथा-सार (सारांश) अपने शब्दों में लिखिए।

अथवा

'सीमा-रेखा' एकांकी का कथानक या कथावस्तु लिखिए।

2. 'सीमा-रेखा' एकांकी के स्त्री पात्रों में कौन सर्वोत्कृष्ट है, उसका चरित्र-चित्रण कीजिए।

अथवा

'सीमा-रेखा' एकांकी के आधार पर सविता के चरित्र की विशेषताएँ लिखिए।

3. 'सीमा-रेखा' एकांकी के आधार पर शरतचन्द्र अथवा सुभाष दोनों में से किसी एक के चरित्र पर अपने विचार प्रकट कीजिए।

4. कथा-संगठन के विकास की दृष्टि से 'सीमा-रेखा' एकांकी की कथावस्तु की समीक्षा कीजिए।

5. 'सीमा-रेखा' एकांकी के आधार पर शरतचन्द्र और सुभाष के चरित्रों की तुलना कीजिए।

6. 'सीमा-रेखा' एकांकी का परिचय देते हुए एकांकीकार के मूल उद्देश्य को प्रकट कीजिए।

7. विष्णु प्रभाकर के जीवन-वृत्त एवं कृतित्व पर प्रकाश डालिए।

8. "जनतन्त्र में सरकार और जनता के बीच कोई विभाजक रेखा नहीं होती।" इस कथन के आधार पर 'सीमा-रेखा' एकांकी की समीक्षा कीजिए।

9. विष्णु प्रभाकर के साहित्यिक परिचय पर प्रकाश डालिए।

● लघु उत्तरीय प्रश्न

1. 'सीमा-रेखा' एकांकी के शीर्षक की सार्थकता बताइये।

2. अरविन्द, सुभाष और विजय की मृत्यु को अन्नपूर्णा, सविता और शरत किस रूप में देखते हैं?

3. 'सीमा-रेखा' एकांकी में एक ही परिवार के पात्र किस उद्देश्य से रखे गये हैं?

4. एकांकीकार ने सुभाषचन्द्र का बलिदान किस उद्देश्य से कराया है? टिप्पणी लिखिए।

5. 'सीमा-रेखा' एकांकी में भारतीय परिवार के वातावरण की झलक कहाँ-कहाँ एवं किस रूप में मिलती है?

6. आज के राजनीतिज्ञों के लिए एकांकीकार का क्या सन्देश है?

7. सीमा-रेखा में कौन-सी सीमा-रेखा टूटती हुई दिखायी देती है?

8. "आज के भारतीय परिवेश में विद्यार्थी कानून की चिन्ता नहीं करते हैं।" इस कथन में निहित व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए।

9. 'सीमा-रेखा' एकांकी से दस सुन्दर वाक्य लिखिए।

10. 'भीड़ को कानून अपने हाथ में नहीं लेना चाहिए।' यह किसका कथन है? इस कथन पर एक अनुच्छेद अपनी भाषा में लिखिए।

● वस्तुनिष्ठ प्रश्न

सही उत्तर के सम्मुख सही (✓) का चिह्न लगाइये—

1. इस एकांकी का शीर्षक सीमा-रेखा है, क्योंकि—

(अ) गोलीकाण्ड और हत्या, अधिकार और अराजकता की सीमा-रेखा है। ( )

(ब) जनतन्त्र में जनता और सरकार में कोई विभाजक रेखा नहीं है। ( )

(स) चारों भाइयों के स्वार्थ की अलग-अलग सीमा-रेखा है। ( )

2. विजय अनियन्त्रित भीड़ पर गोली नहीं चलाता, क्योंकि—

(अ) वह अरविन्द की मृत्यु का प्रायश्चित्त करना चाहता था। ( )

(ब) भीड़ पर गोली चलाने का आदेश उसे सरकार से प्राप्त नहीं था। ( )

(स) शरतचन्द्र ने उसे गोली चलाने से मना कर दिया था। ( )

3. इस एकांकी में उठायी गयी समस्या सम्बन्धित है—

(अ) राष्ट्र से ( )

(ब) सरकार से ( )

(स) परिवार से ( )

4. अन्नपूर्णा पुलिस द्वारा गोली चलाने का समर्थन करती है, क्योंकि—

(अ) वह अराजकता को पसन्द नहीं करती। ( )

(ब) पुलिस कप्तान विजय उसका देवर है। ( )

(स) वह व्यापारी वर्ग से सम्बन्धित है, जिसकी रक्षा पुलिस से ही होती है। ( )

● आन्तरिक मूल्यांकन

1. भीड़ को कानून अपने हाथ में नहीं लेना चाहिए, इससे आप कहाँ तक सहमत हैं? अपने विचार प्रकट कीजिए।
2. विष्णु प्रभाकर की रचनाओं की एक सूची बनाइए।

❖